IMPACT FACTOR IIFS-6.875

अंक : 99 वर्ष : 29 संख्या : 2

ISSN 2278-3911

अप्रैल-जून,2022

SHODH-PRAKALP

A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal

शोध-प्रकल्प

त्रैमासिक रिसर्च जर्नल

www.shodh-prakalp.com

अतिथि संपादक

डॉ. संदीप अवस्थी

वरिष्ठ आलोचक-कथाकार, अजमेर (राजस्थान)

Editor

DR. SUDHIR SHARMA

संपादक

डॉ. सुधीर शर्मा

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भिलाई नगर जिला- दुर्ग (छ.ग.)

डॉ. विजय लक्ष्मी शास्त्री
सहा. प्राध्यापक, हिन्दी
रा.गा.शास.स्नातकोत्तर
महा. अम्बिकापुर, सरगुजा(छ.ग.)

■ शोध एवं अनुसंधान विकास केंद्र, रायपुर का प्रकाशन

■ RESEARCH & RESEARCH DEVELOPMENT CENTRE, RAIPUR

■ अंतरराष्ट्रीय मानक मान्यता प्राप्त बहुप्रसारित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में मान्य शोधपत्रिका

Volume XCIX Number 2 April-June. 2022

U.G.C. NO. 63535(OLD LIST) email :shodhprakalp@gmail.com

SHODH-PRAKALP
A Peer Reviewed Refereed Quarterly Research Journal ISSN 2278-3911
अंक : 99 वर्ष : 29 संख्या :2 अप्रैल-जून,2022

INDEX

1	वीरेन डंगवाल के काव्य में राजनीति	डॉ. मनुप्रताप, श्रीमती पूनम पाठक	07
2	सांस्कृतिक पर्यटन य चुनौतियाँ और संभावनाएँः भारतीय संस्कृति गुजरात की संस्कृति	डॉ. नजमा ए. मलेक	10
3	SOME MEASURES FOR CRIME CONTROL	DR. APARNA SHUKLA	15
4	"किशोरावस्था की समयस्याओं के संदर्भ में निर्देशन व मार्गदर्शन की प्रासंगिकता"	डॉ अशोक कुमार डॉ कमल श्रीवास्तव	17
5	मैला आँचल निर्मल आँचल का प्रत्याख्यान	शिव कैलाश यादव	25
6	हिन्दी भाषा एवं साहित्य को हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का प्रदेय	सुश्री अमृता केसरवानी	29
7	लोकगीतों मे नारी जीवन (छत्तीसगढ़ के लोकगीतों के विशेष संदर्भ मे)	डॉ. विजय लक्ष्मी शास्त्री मनोरमा पाण्डेय	33
8	उत्तर भारत में 'अन्य पिछड़ा वर्ग' की स्थिति का संक्षिप्त विवरण	सुरजीत सिंह	37
9	SUBCONSCIOUS IN THE CHARACTERS OF SHAKESPEARE	DR. DEEPA RASTOGI	41
10	लोकनाट्य स्वाँग : कल, आज और कल'	डॉ. निरुपम शर्मा	45
11	विभिन्न ग्रंथों में वर्णित वस्त्र–परिधान कला का ऐतिहासिक संदर्भों में विवेचन	कु. गरिमा शुक्ला	47
12	गुरु गोविंद सिंह कृत 'चंडी चरित्र' में जीवन मूल्य	डॉ. प्रिया शर्मा	49
13	कबीर और संत जांभोजी	डॉ सुनीता अवस्थी	52
14	REFLECTION OF INDIAN RURAL LIFE IN THE POEMS OF SAROJINI NAIDU	SHILPI SHARMA	56
15	ACHUTAN RAMACHANDRAN- GOANFALONIER OF INDIAN CONTEMPORARY ART	SUPRIYA AMBER DR. ARUNA	58
16	हिंदी फिल्मों में चित्रित समलैंगिक संबंधों के संदर्भ में जीवनमूल्य	डॉ. चंदा सोनकर	62
17	पर्यटन और कला	डॉ. जूही शुक्ला	65
18	अभिमन्यु अनत के उपन्यासों में नारी पात्र (अचित्रित व मुड़िया पहाड़ बोल उठा उपन्यास के विशेष संदर्भ में)	जयन्ती	68
19	प्राचीन भारत का गौरव नालंदा विश्वविद्यालय'	डॉ. रश्मिराज वर्मा	70
20	डॉ प्रेमा मिश्रा का समकालीन कला में स्थान	प्रो. डॉ. लक्ष्मी श्रीवास्तव, शिवम गुप्ता	73
21	मृदुला गर्ग कृत 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास में नारी संवेदना	प्रा. डॉ. संगिता उप्पे	75
22	समकालीन यथार्थता का मूल दस्तावेज शशिप्रभा शास्त्री का कहानी साहित्य	चारु रानी	79
23	मीराँ दीवानी पर विवेचना सुहानी	प्रा. डॉ. गोविन्दकुमार टी. वेकरिया	82
24	छतरपुर की शैलचित्रों का आध्यात्मिक एवं दार्शनिक पक्ष	डॉ. अंजलि पाण्डेय गरिमा मिश्रा	86
25	मानवतावाद के संदर्भ और एम.एन.रॉय – एक नवीन दृष्टि	एम.एन. रॉय	89

www.shodhprakalp.com

शोध-प्रकल्प में प्रकाशित शोधपत्रों और आलेखों में व्यक्त विचार या तथ्यों से संपादक /संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है उनके लेखों में पुनरावृत्ति अथवा मौलिकता के संबंध में लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं।

www.shodh-prakalpresearch.com

SHODH-PRAKALP
A Quarterly Peer Reviewed
Refereed Research Journal

ISSN 2278-3911

लोकगीतों मे नारी जीवन
(छत्तीसगढ़ के लोकगीतों के विषेश संदर्भ मे)

डॉ. विजय लक्ष्मी शास्त्री
सहा. प्राध्यापक हिन्दी
राजीव गांधी शास, स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर सरगुजा (छ.ग.)

मनोरमा पाण्डेय
एम.फिल (हिन्दी)
राजीव गांधी शास. स्नातकोत्तर महाविद्यालय
अम्बिकापुर सरगुजा (छ.ग.)

शोध सारांशः– एक सामाजिक प्राणी होने के साथ–साथ मनुष्य समाज के विभिन्न गतिविधियाँ, रीतिरिवाज, तौर तरीके, गीत–संगीत, परम्पराओं आदि को अपनाया। गीतों का जीवन में विशेष महत्व रहा है। प्रारम्भ से ही मनुष्य अपना मनोरंजन करने के साथ ही साथ अपनी जीवोकोपार्जन भी लगभग गीतों के माध्यम से करता था। लोकगीतों मे सामाजिकता का सुदर्शन और मनोहारी स्वरूप दिखाई पड़ता है।

लोकगीत अधिकांशतः महिलाओं द्वारा गाया जाने वाला गीत होता है, जिसे किसी वाद्य यंत्र की आवश्यकता नहीं, वो जो स्वयं अपने अन्दर छिपी भावनाएँ चाहे वो सुखद हो या दुखद अपनी सुरीली कंठो के माध्यम से लोकगीतो का उद्घाटन करती है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्व. डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा द्वारा रचित एक गीत 'अरपा पैरी के धार, महानदी हे अपार' जनमानस तक इतनी पहुंच चुकी है कि राजकीय गीत के रूप मे अपनी पहचान बना ली है और इस गीत को अपने मधुर कंठों से गाने का कार्य पद्मश्री से सम्मानित ममता चंद्राकर ने किया।

नारी जीवन की बात करें तो हम देखते हैं कि प्राचीनकाल से लेकर आजतक कैसे उसने सहनशील होने के साथ–साथ नारी सशक्तिकरण का परिचय दिया। अपने अन्दर छिपे सुखद एवं दुखद अनुभवों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया जो लोक में प्रचलित हो गये और लोकगीत बन गये। जन्म से लेकर मृत्यु तक के गीतों को नारी ने अपने कंठ मे भरकर समस्त धरती रूपी समाज को सींचा है।

लोकगीत को जानने के पूर्व हमें लोक शब्द को समझना होगा। "लोक शब्द के विषय मे डॉ. सत्येन्द्र ने कहा है कि लोक मनुष्य समाज का वह वर्ग है जो अभिजात्य संस्कार शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना अथवा अहंकार से शून्य है और जो एक परंपरा के प्रवाह मे जीवित रहता है।"[1]

लोकगीत हमारे जीवन का महासागर है, जिसे हम जितना भी सुने उसकी गहराईयों मे डुबते चले जाते हैं। लोकगीतो को अधिकांशतः महिलाओं द्वारा गाया जाता है, इनकी सुरीली कंठो से निकली गीतों से तप्त हृदय को शीतलता प्रदान होती है।

पेरी के अनुसार, "ये गीत लोक की परम्परागत विरासत है जो अनुभूतियों का उच्छवास और जीवन के स्वच्छ तथा निर्मल दर्पण होते है।"[2]

ब्रिटानिका विश्वकोश में लोकगीतों को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि, "वास्तव में लोकगीत उतना ही प्राचीन है, जितना आदिम मानव! यह जंगल के उस वृक्ष के समान है जिसकी जड़े अतीत की गहराई मे दफन होती है। फिर भी यह नए शाख नए पत्ते तथा नया फल निरन्तर देता रहता है।"[3]

इस परिभाषा को यदि विश्लेषण किया जाए तो यह नारी जीवन के ईर्द गिर्द घुमता दिखाई देता है, जिस प्रकार एक नारी अपने जीवन के सुखद एवं दुखद अनुभवों को दफन कर एक लोकगीत को जन्म देती है और समाज के साथ निरन्तर आगे बढ़ती जाती है। लोकगीत मे स्त्री एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। सुआ गीत इस परिभाषा का महत्पूर्ण उदाहरण है जिसमे एक नारी अपने नारी जीवन को पुनः न मिलने की कामना करती है–

तरि नरि ना ना मोर
तरि नरि ना ना गा,
ओ सुआ न
तिरिया जनम मोर झन देबे
तिरिया जनम मोर गऊ को बरोबर
गऊ के बरोबर
रे सु आना
तिरिया जनम झन देबे........[4]

लोकगीतों मे नारी के विभिन्न रूप देखने को मिलती है, कहीं नारी एक पत्नी के रूप मे तो कहीं एक सास के रूप मे, कहीं भावुक सहधर्मिणी, कही बेटी तो कही एक सुखद क्षण देने वाली प्रियतमा के समान है।

लोकगीतों मे नारी जीवन –

प्राचीन काल मे जहाँ नारियों को एक मात्र भोग की वस्तु समझा जाता था, उसे सामाजिक पराधीनता पुरूष अधीनस्थता, सेवा त्याग की मूर्ति केवल समझा जाता रहा है, किन्तु सामाजिक पुनर्जागरण और राजनीतिक चेतना के उद्भव और विकास के साथ–साथ नारी के प्रति समाज मे लोगों के दृष्टिकोण मे बदलाव आया। लोकगीतों को मुख्यतः मैंने तीन वर्गो में विभाजित किया है, जो मुख्यतः नारी गीत से सम्बन्धित है –

1. सामाजिक क्षेत्र जीवन मे लोकगीत (नारी के संदर्भ में) :–

किसी भी समाज की संस्कृति को जानने पहचानने का सबसे अच्छा माध्यम लोकगीत है। सामाजिक जीवन में व्यक्ति के जन्म, विवाह तथा मरण आदि समाहित है। इसी सम्बन्ध मे डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'शम्बर' जी कहते है कि "मानव की प्रायः प्रत्येक संस्कृति मे व्यक्ति की जीवन यात्रा के विभिन्न संक्रमणकालो का विशेष महत्व होता है। जन्म विवाह एवं मरण इस प्रकार की तीन मुख्य स्थितियाँ है जिनके आस–पास मानव समूह विश्वासों, रीति–रिवाजों और व्यवहारों का एक ऐसा जटिल ताना–बाना बुन लेता है कि उनके वास्तविक स्वरूप को समझे बिना उस संस्कृति का पूर्ण चित्रण प्राप्त ही नहीं किया जा सकता हैं।"[5]

शिशु जन्म के समय एक स्त्री मातृत्व का सुख भोगती है और उस शिशु को देखकर उसके अन्दर वात्सल्य रस भर उठता है उसे अपने गोद मे जब सुलाने का प्रयत्न करती है तो वो लोरी गाती है। इस पर मीनाक्षी शर्मा ने कहा है कि "लोरी अथवा पालना गीतों की परम्परा भी अति प्राचीन है। संस्कृत साहित्य में इसके व्यापक संकेत मिलते है।"[6]

"निंदिया तोके आबे रे निंदिया तोके आवे रे
सुत जाबे सुत जाबे, बाबू मोर सूत जाबे रे"[7]

एक स्त्री जब वैवाहिक जीवन मे प्रवेश करती है तो उसके मन मे अनेक धारणाएँ उत्पन्न होती हैं कि कैसे वो अपने माता–पिता, भाई–भाभी, बहन से अलग एक नये घर में रहेगी? विदाई के समय माँ, पिता, भईया–भाभी ने गीत के माध्यम से अपनी धारणाओ को बताया है :–

तै परदेसनिन हो गे वो
तै परदेसनिन हो गे
कि जा परदेसिया के साथ
दाई कथे आबे रोज बेटी
कि ददा कथे आबे दिन चार
भाई कथे आबे तीजा पोरा में
कि भऊजी कथे आये के का काम[8]

इस गीत मे एक स्त्री के मातृत्व को बखूबी से दिखाया गया है कि कैसे वो अपनी बेटी को रोज आने की बात कह रही है।

2. धार्मिक जीवन मे लोकगीत (नारी के संदर्भ में) :–

स्त्रियो में धार्मिक भावना का विकास प्रारम्भ से ही हुआ है चाहे वो तीज, त्यौहार, पर्व, उत्सव, भक्ति की भावना हो। डॉ. राजेश श्रीवास्तव 'शम्बर' ने इसी सन्दर्भ में कहा है कि, लोकगीत अधिकतर उत्सव, पर्वो, त्यौहारो और आयोजनों से संबंधित है।"[9] नारी जीवन मे व्रत, पूजा–पाठ, त्यौहार का महत्वपूर्ण स्थान है कैसे एक स्त्री अपने पति की मंगल कामना के लिए वट सावित्री की पूजा करती है। कैसे एक माँ अपने पुत्र–पुत्रियों के दीघार्यु होने की कामना जीवित्पुत्रिका व्रत से करती है। अपने आराध्य देवी–देवताओं से अपने परिवार की सुख–समृद्धि की कामना करती है इसी संबंध मे डॉ. गोविन्द चातक ने कहा है कि "धर्म के साथ साहित्य, संगीत, नृत्य आदि कलाओं का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है।"[10] छत्तीसगढ़ मे आदि शक्ति की आराधना प्रारम्भ से ही कि जाती है, गौरा पूजा अर्थात् गौरी माता के पूजा में भी एक लोकगीत प्रचलित है इस गीत मे गौरी माता के प्रति सेवा भावना को दिखाया है :–

जोहर जोहर मोर गौरा देवी, सेवरि लाँगव तोर
गौरा देवी के ढ़िला छवायेंव झूले परेवना के हंसा
हंसा चरिथय मोर मूंगा, मोती फूले धना के दार।"[11]

3. अन्य गीतों मे नारी जीवन :–

एक सकुशल गृहिणी होने के साथ–साथ नारी एक कामकाजी महिला के रूप में भी उभर कर आई है वो श्रम भी करती है, रोपा लगाती है, मनोरंजन करती है प्रकृति की पूजा भी करती है इसी के साथ इन सभी के लोकगीतों को अपने सुरीले कंठ से आविर्भाव भी करती है।

अन्य गीतों मे श्रृंगार गीत भी प्रचलित है जो स्त्रियों के द्वारा गाया जाता है। स्त्रियां श्रृंगार प्रिय होती हैं चाहे यह श्रृंगार स्त्रियो मे गोदना गोदवाने की हो या आभूषणों की। गोदना गोदवाने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही प्रथा है।

ऐसी मान्यता है कि एक गोदना ही है, जो मरने के उपरान्त ईश्वर के पास जाता है। गोदना गोदवाने की प्रथा छत्तीसगढ़ की स्त्रियो मे मुख्यतः देखा गया है। यहाँ की बुजुर्ग स्त्रियों मे देखा गया है कि वे कितने सुन्दर ढंग से हाथों, पैरों, गले मे आभूषण की भांति गुदना गुदवाती थी आज भी यह प्रथा प्रचलित है किन्तु आधुनिकता के साथ साथ गोदना गोदवाने की प्रथा भी कम होती जा रही है आजकल इसका रूप रंग छोटा हो गया है एक स्त्री अपनी बेटी को गोदना गोदवाने के लिए प्रेरित करती है वो कहती है :–

का गोदना ला गोदों
बेटी का गोदना ला गोदों
मोर नान दुलारिन बेटी
का गोदना गोदो
नाक गोदा ले नाक में फूली
माथ गोदा ले बेंदिया
बांह गोदा ले बांह बहुंटवा
हाथे गोदा ले चुरवा
माथे ऊपर ते बुंदिया गोदा ले[12]

इस गीत मे एक स्त्री अपनी बेटी से कहती है कि ये मेरी बेटी मै तुझे एक गोदना के द्वारा ही पूर्ण रूप से श्रृंगार कर देती हूँ। तेरे नाक मे नथ, माथे पर बिंदी, बांह पर बहुंटा और हाथ मे चुड़ी गोदना से गोद देती हूँ जिससे तुम्हारा श्रृंगार पूर्ण हो जायेगा।

छत्तीसगढ़ मे बिहारी बोलियो का भी प्रभाव अधिकांशतः देखा गया है, क्योंकि यहाँ इस बोली विशेष के निवासरत है। यहाँ छठ पर्व का विशेष महत्व है। छठ पर्व मे सूर्य के उगते और अस्त होने तक की पूजा की जाती है। छठ पर्व मुख्यतः उत्तर भारतीय राज्य बिहार और उत्तर प्रदेश मे मनाया जाता था किन्तु अब इस महापर्व को छत्तीसगढ़, गुजरात, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, बैंगलोर आदि भारत के हिस्सों मे मनाया जाता है। यह पर्व अब भारत तक ही सीमित नही है बल्कि भारतीय लोगों ने अन्य देशो मे भी इस पर्व की अस्मिता को बनायें रखा है। इस छठ पर्व पर लोक गीत प्रचलित है :–

कांचहिं बाँस के बंहगिया, बँहगी लचकति जाइ।
रउरा भाराहा होइना कवन राम; वँहगी घाटे पहुँचाई।।1।।
बाट में पूछेला बटोहिया; इ वँहगी केकरा के जाई।
तू त अन्हरा इबे रे बटोहिया, इ वँहगी छठि मइया के जाई।।2।।
हमरा जे बाडी छठिय मइयां, इ दल उनके के जाई ।।3।। (13)

अम्बिकापुर की महिलाएँ छठ पूजा करते हुये इस छठ गीत का तात्पर्य है कि कच्चे बांस की बहंगी (कॉवर) लचकती हुई जा रही है। स्त्री अपने पति से कहती है कि इस बहंगी को उसे घाट पर पहुँचा दीजिए।।1।।

जब स्त्री का पति बहंगी पर बोझ उठाकर घाट पर लिये जा रहा था तब किसी बटोही (राहगीर) ने पूछा कि यह बहंगी कहां जायेगी तब उसने उत्तर दिया कि हे बटोही क्या तुम अंधे हो देखते नही कि यह बहंगी छठी माता के घाट जा रही है।।2।।

हमारी जो छठी माता है उनके लिए यह सारा समान जा रहा है।।3।।

स्त्रियाँ व्रत पूजा अनुष्ठानों को विशेष महत्व देती है, चाहे यह पूजा अपने परिवार या पति एवं पुत्र के लिए हो। तीज त्योहार, जीवित्पुत्रिका व्रत यहाँ कि स्त्रियों मे विशेष रूप से देखा गया इसके अतिरिक्त मुझे यहां (अम्बिकापुर) की कुछ महिलाओ से सुहागली पूजा के विषय मे जानकारी दी, उन्होंने बताया कि यह पूजा सुहागन महिलायें अपने पति की लम्बी आयु के लिए करती है और सुहागन माता जिन्हें औसान माता (मुश्किल आसान करने वाला), संकटा माता (संकट हरने वाली) आदि नामो से जाना जाता है पूजा की जाती है एवं कथा सुनी जाती है या[14] सुहावनो को प्रसाद स्वरूप गुड़ चना, मीठा दिया जाता है। स्त्रियां मिलकर गीत गाती है :–

हमरे पटा में आ जइऔ सुहागन माता
हमरे पटा में आ जइऔ सुहागन माता
हमरे पटा में सिन्दुर रखो है सिंदुर लगाने
चले आना सुहागन माता।
हमरे पटा में माहुर रखो है माहुर लगाने
चले आना सुहागन माता।
हमरे पटा मे चुड़ी रखो है चुड़ी लगाने
चले आना सुहागन माता।।[17]

अम्बिकापुर की महिलाएँ सुहागली पूजा करते हुये

आधुनिकता के साथ साथ नारी के प्रति लोगो के दृष्टिकोण मे बदलाव दिखाई दे रहे है इसका अच्छा उदाहरण छत्तीसगढ़ ही नही अपितु विश्वविख्यात जननी के समान श्रीमती डॉ. तीजन बाई ने पण्डवानी गाकर पूरे विश्व मे प्रस्तुत किया यह लोकगीत जनमानस तक इतनी पहुंच चुकी है कि शायद ही इसे कोई भूलें। इनके अतिरिक्त लोकगीतों मे जिन महिलाओं की भागीदारी रही है वो सुरूज बाई खाण्डे, जलक्षत्री ममता चन्द्राकर आदि जिन्होंने छत्तीसगढ़ी लोकगीतों को शिखर तक पहुँचा दिया है।

पण्डित हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते है कि "लोकगीतों की एक–एक बहू के चित्रण पर रीतिकाल की सौ सौ मुग्धाएँ, खण्डिताएँ, और धीराएँ निछावर की जा सकती हैं क्योंकि ये निरलंकार होने पर भी प्राणमयी है, और वे अलंकारों से लदी हुई भी निष्प्राण है। ये अपने जीवन में किसी शास्त्र विशेष की मुखापेक्षी नहीं है। ये अपने आप में परिपूर्ण है।[15]

सन्दर्भ

1. 'शम्बर' श्रीवास्तव डॉ. राजेश, लोकसाहित्य, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल, पृ. 12
2. शर्मा मीनाक्षी, लोकगीतों मे कृष्ण काव्य का स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1989 पृष्ठ 34

3. गावीत डॉ. जयश्री, लोकसाहित्य विविध आयाम एवं नयी दृष्टि, विद्या प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण, 2007 पृष्ठ 135
4. अग्रवाल डॉ. अनसूया 36 गढ़ी लोकसाहित्य और व्याप्ति शताक्षी प्रकाशन रायपुर प्रथम संस्करण, 2011 पृष्ठ 49
5. 'शम्बर' श्रीवास्तव डॉ. राजेश, लोकसाहित्य, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल पृष्ठ 19
6. शर्मा मीनाक्षी, लोकगीतों में कृष्ण काव्य का स्वरूप' तक्षशिक्षा प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1989
7. गोयल डॉ. कुन्तल, काले कण्ठो के श्वेत गीत, पंकज बुक्स दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पुष्ठ 80
8. गोयल डॉ. कुन्तल, काले कण्ठो के श्वेत गीत, पंकज बुक्स दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ 327
9. 'शम्बर' श्रीवास्तव डॉ राजेश लोकसाहित्य, कैलाश पुस्तक सदन भोपाल पृष्ठ 8
10. चातक डॉ. गोविन्द, भारतीय लोक संस्कृति का सन्दर्भ मध्य हिमालय, तक्षशिला प्रकाशन संस्करण 1996 नई दिल्ली पृष्ठ 73
11. वर्मा डॉ. भगवान सिंह, छत्तीसगढ़ का इतिहास, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल चतुर्थ (संशोधित परिवर्द्धित) 2003
12. गोयल डॉ. कुन्तल, काले कण्ठो के श्वेत गीत, पंकज बुक्स दिल्ली प्रथम संस्करण 2017 पृष्ठ 85
13. उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव, भोजपुरी लोकगीत (भाग 1) 2011 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, द्वितीय संस्करण पृष्ठ 333–334
14. प्राथमिक स्त्रोत
15. परमार श्याम, भारतीय लोक साहित्य राजकमल पब्लिकेशन्स लिमिटेड दिल्ली बम्बई, नई दिल्ली, कॉपीराइट 1954 पृष्ठ 132

■■